

मरकुस 15:1-16:20

प्रत्येक सुसमाचार इस बात में भिन्न है कि इसे एक अलग व्यक्ति ने लिखा है, यह यीशु के जीवन को विभिन्न घटनाओं पर ध्यान केंद्रित करते हुए रिकॉर्ड करता है, या एक ही घटना को अधिक या कम विस्तार से रिकॉर्ड करता है। हालांकि, प्रत्येक सुसमाचार समान है, क्योंकि यह एक ही कहानी बताता है, घटनाओं के एक ही क्रम का पालन करता है और मसीह की मृत्यु, दफन और पुनरुत्थान का वर्णन करके समाप्त होता है।

मार्क अपनी कहानी को उन तीन स्तरों से बताना बंद कर देता है जिनका हम अनुसरण कर रहे थे (जनसमूह की सेवा, अपने शिष्यों को, यहूदी नेताओं के साथ टकराव) और अब पूरी तरह से यीशु के जीवन के अंतिम घंटों पर ध्यान केंद्रित करता है, जिसे कुछ लेखकों ने "पैशन" कहा है।

सभी घटनाएँ, भविष्यवाणियाँ, शिक्षाएँ और वादे इस समय तक पहुँचने के लिए मार्गदर्शित कर रहे हैं।

पिलातुस के सामने यीशु — 15:1-15

यहूदी नेताओं के लिए समस्या यह थी कि वे यीशु को मारना चाहते थे लेकिन उनके पास न तो कोई वैध कारण था और न ही ऐसा करने का अधिकार। रोमन कानून के तहत केवल एक रोमन अधिकारी ही मृत्युदंड दे सकता था।

¹ जैसे ही सुबह हुई महायाजकों, धर्मशास्त्रियों, बुजुर्ग यहूदी नेताओं और समूची यहूदी महासभा ने एक योजना बनायी। वे यीशु को बँधवा कर ले गये और उसे राज्यपाल पिलातुस को सौंप दिया।

² पिलातुस ने उससे पूछा, “क्या तू यहूदियों का राजा है?”

यीशु ने उत्तर दिया, “ऐसा ही है। तू स्वयं कह रहा है।”

³ फिर प्रमुख याजकों ने उस पर बहुत से दोष लगाये। ⁴ पिलातुस ने उससे फिर पूछा, “क्या तुझे उत्तर नहीं देना है? देख वे कितनी बातों का दोष तुझ पर लगा रहे हैं।”

- मरकुस 15:1-4

पिलातुस 26 ईस्वी से 36 ईस्वी तक यहूदा में प्रोक्क्यूरेटर (रोम का सैन्य प्रतिनिधि) था। उसका सामान्य निवास तट के पास केसरेया में था, लेकिन वह पास्का के मौसम के दौरान व्यवस्था बनाए रखने के लिए यरूशलेम में था।

उस सुबह परिषद फिर से मिली ताकि वे अपने निर्णय की पुष्टि कर सकें और यीशु को पिलातुस के सामने लाने की अपनी रणनीति बना सकें। चूंकि पिलातुस केवल राजनीतिक मामलों पर विचार करेगा, यहूदियों ने अपनी निंदा को राजनीतिक संदर्भ में प्रस्तुत किया: यीशु यह दावा कर रहे थे कि वे "यहूदियों के राजा" हैं। यह सीज़र के अधिकार के लिए एक प्रत्यक्ष खतरा था और इसे निपटाना आवश्यक था।

मार्क पिलातुस और यीशु के बीच उस उल्लेखनीय संवाद को प्रदान नहीं करता जो यूहन्ना के सुसमाचार में शामिल है (यूहन्ना 18:28-40). वह सबसे संक्षिप्त विवरण देने में संतुष्ट है। पिलातुस यीशु से इन आरोपों के प्रति उनकी रक्षा या स्पष्टीकरण के बारे में प्रश्न करता है, लेकिन यीशु चुप रहते हैं, केवल आरोप को स्वीकार करते हैं। अन्य सुसमाचार लेखक पिलातुस की दुविधा को समझाते हैं कि कैसे वह यह जानता है कि यीशु निर्दोष हैं, जबकि यहूदी नेताओं और भीड़ के दबाव में है। मार्क केवल पिलातुस की यीशु के प्रति समग्र प्रतिक्रिया को रिकॉर्ड करता है, जो आश्चर्य की है।

⁶ फ़सह पर्व के अवसर पर पिलातुस किसी भी एक बंदी को, जिसे लोग चाहते थे उनके लिये छोड़ दिया करता था। ⁷ बरअब्बा नाम का एक बंदी उन बलवाइयों के साथ जेल में था जिन्होंने दंगे में हत्या की थी।

⁸ लोग आये और पिलातुस से कहने लगे कि वह जैसा सदा से उनके लिए करता आया है, वैसा ही करे। ⁹ पिलातुस ने उनसे पूछा, “क्या तुम चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिये यहूदियों के राजा को छोड़ दूँ?” ¹⁰ पिलातुस ने यह इसलिए कहा कि वह जानता था कि प्रमुख याजकों ने ईर्ष्या-द्वेष के कारण ही उसे पकड़वाया है। ¹¹ किन्तु प्रमुख याजकों ने भीड़ को उकसाया कि वह उसके बजाय उनके लिये बरअब्बा को ही छोड़े।

¹² किन्तु पिलातुस ने उनसे बातचीत करके फिर पूछा, “जिसे तुम यहूदियों का राजा कहते हो, उसका मैं क्या करूँ बताओ तुम क्या चाहते हो?”

¹³ उत्तर में ये चिल्लाये, “उसे क्रूस पर चढ़ा दो!”

¹⁴ तब पिलातुस ने उनसे पूछा, “क्यों, उसने ऐसा क्या अपराध किया है?” पर उन्होंने और अधिक चिल्ला कर कहा, “उसे क्रूस पर चढ़ा दो।”

- मरकुस 15:6-14

उस समय की प्रथा (यहूदियों के बीच लोकप्रियता पाने और उनके सबसे महत्वपूर्ण त्योहार में भाग लेने के लिए) यह थी कि पास्का के दौरान लोगों की पसंद का एक कैदी छोड़ दिया जाता था। भीड़ बाराब्बास के लिए चिल्ला रही थी, जो एक गुरिल्ला योद्धा था और यहूदी गुट का हिस्सा था जो अपनी जाति को रोमन प्रभुत्व से मुक्त करना चाहता था। बाराब्बास जेल में था क्योंकि उसने उनके एक विद्रोह के दौरान किसी को मार दिया था।

इस बिंदु पर पिलातुस यीशु को मुक्त करने के लिए तीन प्रयास करता है:

1. वह भीड़ को यीशु और बराब्बा के बीच चुनाव करने की कोशिश करता है। एक, एक हत्यारा और उपद्रवकारी; दूसरा, एक ऐसा व्यक्ति जो बहुत लोकप्रिय था और लोगों के लिए बहुत अच्छा किया था। पिलातुस शायद सोचता था कि यह नेताओं की साजिश को चकमा देगा और भीड़ को यीशु को चुनने पर मजबूर करेगा। नेताओं ने भीड़ को भड़काकर यह सुनिश्चित किया कि वे यीशु के बजाय बराब्बा को चुनें।

2. फिर पिलातुस भीड़ से पूछता है कि वे "यहूदियों के राजा" के साथ क्या करना चाहते हैं। क्या वे नहीं समझते थे कि बराब्बा को चुनने का क्या मतलब होगा? भीड़ ने साफ शब्दों में अपनी इच्छा जताई, "उसे क्रूस पर चढ़ाओ!"
3. अंत में, पिलातुस उनकी न्याय की भावना को जगाते हुए पूछता है कि यीशु को क्यों दोषी ठहराया जाना चाहिए? वह उन्हें याद दिलाता है कि यीशु पर कोई अपराध सिद्ध नहीं हुआ है। भीड़ ने उसका सवाल तक नहीं सुना, वे बस यीशु को मरते देखना चाहते थे।

बिल्कुल, पिलातुस सरलता से यीशु को छोड़ सकता था क्योंकि उसके खिलाफ वास्तव में कोई मामला नहीं था, लेकिन क्योंकि वह लोगों की पसंद चाहता था, उसने एक निर्दोष व्यक्ति को मौत की सजा दी जिसे वह निर्दोष जानता था। एक निर्दोष व्यक्ति को एक दोषी व्यक्ति के स्थान पर रखा जाता है, और अब यीशु को यातना (चाबुक लगाना) और फांसी के लिए पहरेदारों के हवाले कर दिया जाता है।

क्रूस पर चढ़ाना — 15:16-41

¹⁶ फिर सिपाही उसे रोम के राज्यपाल निवास में ले गये। उन्होंने सिपाहियों की पूरी पलटन को बुला लिया। ¹⁷ फिर उन्होंने यीशु को बैजनी रंग का वस्त्र पहनाया और काँटों का एक ताज बना कर उसके सिर पर रख दिया। ¹⁸ फिर उसे सलामी देने लगे: "यहूदियों के राजा का स्वागत है!" ¹⁹ वे उसके सिर पर सरकंडे मारते जा रहे थे। वे उस पर थूक रहे थे। और घुटनों के बल झुक कर वे उसके आगे नमन करते जाते थे। ²⁰ इस तरह जब वे उसकी खिल्ली उड़ा चुके तो उन्होंने उसका बैजनी वस्त्र उतारा और उसे उसके अपने कपड़े पहना दिये। और फिर उसे क्रूस पर चढ़ाने, बाहर ले गये।

- मरकुस 15:16-20

महल/प्रेटोरियम एंटोनिया किला था और पहरेदार इस परिसर के एक चौक में स्थित थे। एक कोहोर्ट लगभग एक हजार सैनिकों का होता है। वे "राजा का खेल" खेलते थे, एक क्रूर मनोवैज्ञानिक खेल जो कैदियों को हतोत्साहित करने के लिए इस्तेमाल किया जाता था। विचार यह था कि दोषी को शारीरिक रूप से नष्ट करने से पहले मनोवैज्ञानिक और भावनात्मक रूप से नष्ट कर दिया जाए। हालांकि, यह दृश्य यह दर्शाता है कि वे वास्तव में यीशु की सच्ची प्रकृति को घोषित करने के कितने करीब थे।

उन्हें कुरैन का रहने वाला शिमौन नाम का एक व्यक्ति, रास्ते में मिला। वह गाँव से आ रहा था। वह सिकन्दर और रुफुस का पिता था। सिपाहियों ने उस पर दबाव डाला कि वह यीशु का क्रूस उठा कर चले।

- मरकुस 15:21

नए नियम में अलेक्जेंडर और रूफस के अन्य संदर्भ भी थे जो यह सुझाव देते हैं कि वे मसीही बन गए (रोमियों 16:3).

²² फिर वे यीशु को गुलगुता (जिसका अर्थ है “खोपड़ी-स्थान”) नामक स्थान पर ले गये। ²³ तब उन्होंने उसे लोहबान मिला हुआ दाखरस पीने को दिया। किन्तु उसने उसे नहीं लिया। ²⁴ फिर उसे क्रूस पर चढ़ा दिया गया। उसके वस्त्र उन्होंने बाँट लिये और यह देखने के लिए कि कौन क्या ले, उन्होंने पासे फेंके।
²⁵ दिन के नौ बजे थे, जब उन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ाया। ²⁶ उसके विरुद्ध एक लिखित अभियोग पत्र उस पर अंकित था: “यहूदियों का राजा।”

- मरकुस 15:22-26

मुर एक नशीला पदार्थ था जो फांसी दिए जाने वालों को दिया जाता था ताकि क्रूस पर चढ़ाए जाने के समय उनके दर्द को कम किया जा सके। इससे कैदियों को क्रूस पर ठोंकने में आसानी होती थी। यीशु ने इसे अस्वीकार कर दिया क्योंकि उन्होंने मनुष्य के लिए पूरी पीड़ा का प्याला पीने को स्वीकार किया था और इसलिए वे उन महत्वपूर्ण बातों के लिए स्पष्ट मन रखना चाहते थे जो अभी होने वाली थीं।

प्राचीन लेखक कभी कमरबंध का उल्लेख नहीं करते हैं और इसलिए निष्कर्ष यह है कि यीशु को नग्न क्रूस पर चढ़ाया गया था, और उनके वस्त्र उनके क्रूरों के बीच बांट दिए गए थे। सभी कैदियों के खिलाफ आरोप उनके सिर के ऊपर क्रूस की बीम पर चिपकाए जाते थे। यीशु के क्रूस पर जो लिखा था वह केवल इतना था, “यहूदियों का राजा,” एक ऐसा शीर्षक जो यहूदियों को अपमानित करने के लिए था।

²⁷ उसके साथ दो डाकू भी क्रूस पर चढ़ाये गये। एक उसके दाहिनी ओर और दूसरा बाँई ओर।
²⁹ उसके पास से निकलते हुए लोग उसका अपमान कर रहे थे। अपना सिर नचा-नचा कर वे कहते, “अरे, वाह! तू वही है जो मन्दिर को ध्वस्त कर तीन दिन में फिर बनाने वाला था। ³⁰ अब क्रूस पर से नीचे उतर और अपने आप को तो बचा ले!”
³¹ इसी तरह प्रमुख याजकों और धर्मशास्त्रियों ने भी यीशु की खिल्ली उड़ाई। वे आपस में कहने लगे, “यह औरों का उद्धार करता था, पर स्वयं अपने को नहीं बचा सकता है। ³² अब इस ‘मसीह’ और ‘इस्राएल के राजा को’ क्रूस पर से नीचे तो उतरने दे ताकि हम यह देख कर उसमें विश्वास कर सकें।” उन दोनों ने भी, जो उसके साथ क्रूस पर चढ़ाये गये थे, उसका अपमान किया।

- मरकुस 15:27-32

अंतिम अपमान जो यीशु को सहना पड़ा वह यह था कि जो लोग उसे स्वागत करने वाले थे, वे अब उसका मज़ाक उड़ा रहे थे और उसे पीड़ा दे रहे थे। ध्यान दें कि उसके बगल में क्रूस पर चढ़ाए गए दोनों चोर भी इस समय अपमानजनक शब्द कह रहे थे।

कि यीशु को चोरों के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया था, यह उन यहूदियों के लिए एक ठोकर बन गया जो बाद में सुसमाचार सुनते थे क्योंकि वे स्वीकार नहीं कर सकते थे कि उनका मसीहा इस अपमानजनक तरीके से मरेगा। मार्क उल्लेख करता है, हालांकि, कि यह सब उनकी शास्त्रों के अनुसार था।

जो लोग उस दुखद दृश्य को देखने आए थे, उन्होंने उसे एक और चमत्कार करने के लिए चुनौती दी कि वह क्रूस से उतर आए, और नेता आत्मसंतुष्ट महसूस करने लगे क्योंकि उन्हें लगा कि उन्होंने अंततः उसे चुप करा दिया है। उन्होंने यहां तक कि इस तथ्य का उपयोग किया कि यीशु क्रूस पर बने रहे, अपने अविश्वास के लिए औचित्य के रूप में।

³³ फिर समूची धरती पर दोपहर तक अंधकार छाया रहा। ³⁴ दिन के तीन बजे ऊँचे स्वर में पुकारते हुए यीशु ने कहा, “इलोई, इलोई, लमा शबकतनी।” अर्थात्, “मेरे परमेश्वर, मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों भुला दिया?”

³⁵ जो पास में खड़े थे, उनमें से कुछ ने जब यह सुना तो वे बोले, “सुनो! यह एलियाह को पुकार रहा है।”

³⁶ तब एक व्यक्ति दौड़ कर सिरके में डुबोया हुआ स्पंज एक छड़ी पर टाँग कर लाया और उसे यीशु को पीने के लिए दिया और कहा, “ठहरो, देखते हैं कि इसे नीचे उतारने के लिए एलियाह आता है कि नहीं।”

³⁷ फिर यीशु ने ऊँचे स्वर में पुकारा और प्राण त्याग दिये।

³⁸ तभी मन्दिर का पट ऊपर से नीचे तक फट कर दो टुकड़े हो गया। ³⁹ सेना के एक अधिकारी ने जो यीशु के सामने खड़ा था, उसे पुकारते हुए सुना और देखा कि उसने प्राण कैसे त्यागे। उसने कहा, “यह व्यक्ति वास्तव में परमेश्वर का पुत्र था।”

⁴⁰ कुछ स्त्रियाँ वहाँ दूर से खड़ी देख रही थीं जिनमें मरियम मगदलीनी, छोटे याकूब और योसेस की माता मरियम और सलौमी थीं। ⁴¹ जब यीशु गलील में था तो ये स्त्रियाँ उसकी अनुयायी थीं और उसकी सेवा करती थीं। वहीं और भी बहुत सी स्त्रियाँ थीं जो उसके साथ यरूशलेम तक आयी थीं।

- मरकुस 15:33-41

यीशु को सुबह 9:00 बजे (तीसरे घंटे) क्रूस पर चढ़ाया गया था और 12:00 से 3:00 बजे तक एक अंधकार था जो उनके मृत्यु और परमेश्वर की असंतोष का संकेत था। उनके चिल्लाने से हम जानते हैं कि यह उनके सबसे बड़े दुःख का क्षण था। उन्होंने सभी मनुष्यों के पापों के लिए दंड सहा, परमेश्वर से अलगाव। पिता से यह दर्दनाक अलगाव और बाद की मृत्यु वह मूल्य था जो उन्होंने हमारे पापों के लिए चुकाना पड़ा।

जो लोग उसके शब्द सुन रहे थे वे मुड़कर उसका मज़ाक उड़ाने लगे। हिब्रू में, जब परमेश्वर का नाम ज़ोर से बोला जाता था तो वह नबी एलियाह के नाम के समान सुनाई देता था। यहूदी मानते थे कि एलियाह आएगा ताकि मसीह के आगमन की घोषणा करे और गवाही दे। परन्तु यीशु ने अपने प्रेरितों को सिखाया कि यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने वह भूमिका पूरी कर दी है। ये लोग उसके पुकार के केवल पहले दो शब्द सुनकर उसका मज़ाक उड़ाने लगे और कहने लगे, “यह आदमी मर रहा है फिर भी वह एलियाह को बुला रहा है कि वह आए

और गवाही दे कि वह मसीह है।" वे उसे जीवित करने की कोशिश करने लगे ताकि यह देखा जा सके कि उसकी एलियाह को पुकार के संबंध में क्या होगा।

यीशु ने चिल्लाने के बाद मृत्यु पाई, और इस समय कई बातें हुईं। मार्क केवल दो का उल्लेख करता है जो दोनों, गैर-यहूदियों और यहूदियों के लिए महत्वपूर्ण थीं:

1. मंदिर की परदा, जो पवित्र स्थान और पवित्रतम स्थान के बीच था, दो टुकड़ों में फट गया। यह संकेत था कि परमेश्वर और मनुष्य के बीच की दूरी समाप्त हो गई है। लोगों को अब पाप के लिए बलि चढ़ाने के लिए महायाजक की आवश्यकता नहीं थी। यीशु ने स्वयं को एक बार पाप के लिए बलि चढ़ाकर उस बाधा को हटा दिया। अब हर कोई किसी भी समय सीधे परमेश्वर के पास उद्धार के लिए जा सकता है, न कि केवल साल में एक बार।
2. मार्क ने उल्लेख किया कि एक रोमन सेनापति ने यीशु का नाम स्वीकार किया। यह भविष्य के गैर-यहूदी पाठकों के लिए इस सुसमाचार का एक महत्वपूर्ण साक्ष्य होगा।

मार्क उन विश्वासी महिलाओं के नाम भी उल्लेख करता है जिन्होंने उनके मंत्रालय का समर्थन किया और जो चुपचाप उनकी मृत्यु को देख रही थीं।

दफ़न

⁴² शाम हो चुकी थी और क्योंकि सब्त के पहले का, वह तैयारी का दिन था ⁴³ इसलिये अरिमथिया का यूसुफ़ आया। वह यहूदी महासभा का सम्मानित सदस्य था और परमेश्वर के राज्य के आने की बाट जोहता था। साहस के साथ वह पिलातुस के पास गया और उससे यीशु का शव माँगा।

⁴⁴ पिलातुस को बड़ा अचरज हुआ कि वह इतनी जल्दी कैसे मर गया। उसने सेना के अधिकारी को बुलाया और उससे पूछा क्या उसको मरे काफी देर हो चुकी है? ⁴⁵ फिर जब उसने सेनानायक से ब्यौरा सुन लिया तो यूसुफ़ को शव दे दिया।

⁴⁶ फिर यूसुफ़ ने सन के उत्तम रेशमों का बना थोड़ा कपड़ा खरीदा, यीशु को क्रूस पर से नीचे उतारा, उसके शव को उस वस्त्र में लपेटा और उसे एक कब्र में रख दिया जिसे शिला को काट कर बनाया गया था। और फिर कब्र के मुँह पर एक बड़ा सा पत्थर लुढ़का कर टिका दिया। ⁴⁷ मरियम मगदलीनी और योसेस की माँ मरियम देख रही थीं कि यीशु को कहाँ रखा गया है।

- मरकुस 15:42-47

शरीर को सूरज डूबने से पहले और शब्बाथ के दिन की शुरुआत से पहले उतारा गया और दफनाया गया। यह अरिमथिया के योसेफ की ओर से साहस की बात थी क्योंकि रोमन की प्रथा थी कि वे शरीरों को क्रूस पर सड़ने तक छोड़ देते थे। एक विश्वासवादी के रूप में, योसेफ अपने प्रभु के सम्मान में यीशु के शरीर को दफनाना चाहता था, और एक यहूदी के रूप में, वह रात होने से पहले दफन पूरा करना चाहता था ताकि भूमि की अपवित्रता से बचा जा सके (व्यवस्थाविवरण 21:23). लिनन का कपड़ा एक चादर थी जिसमें मसाले मोड़े

गए थे। यीशु को जल्दी से इसमें लपेटा गया और एक नए मकबरे में रखा गया, जिसके प्रवेश द्वार पर एक पत्थर लुढ़का दिया गया।

पुनरुत्थान — 16:1-8

¹ सप्ताह का दिन बीत जाने पर मरियम मगदलीनी, सलोमी और याकूब की माँ मरियम ने यीशु के शव का अभिषेक कर पाने के लिये सुगन्ध-सामग्री मोल ली। ² सप्ताह के पहले दिन बड़ी सुबह सूरज निकलते ही वे कब्र पर गयीं। ³ वे आपस में कह रही थीं, “हमारे लिये कब्र के द्वार पर से पत्थर को कौन सरकाएगा?”

⁴ फिर जब उन्होंने आँख उठाई तो देखा कि वह बहुत बड़ा पत्थर वहाँ से हटा हुआ है। ⁵ फिर जब वे कब्र के भीतर गयीं तो उन्होंने देखा कि श्वेत वस्त्र पहने हुए एक युवक दाहिनी ओर बैठा है। वे सहम गयीं।

⁶ फिर युवक ने उनसे कहा, “डरो मत, तुम जिस यीशु नासरी को ढूँढ रही हो, जिसे क्रूस पर चढ़ाया गया था, वह जी उठा है! वह यहाँ नहीं है। इस स्थान को देखो जहाँ उन्होंने उसे रखा था। ⁷ अब तुम जाओ और उसके शिष्यों तथा पतरस से कहो कि वह तुम से पहले ही गलील जा रहा है जैसा कि उसने तुमसे कहा था, वह तुम्हें वहीं मिलेगा।”

⁸ तब भय और अचरज में डूबी वे कब्र से बाहर निकल कर भाग गयीं। उन्होंने किसी को कुछ नहीं बताया क्योंकि वे बहुत घबराई हुई थीं।

- मरकुस 16:1-8

मैरी मगदलीन और जेम्स की माता मैरी और सलोमे ने मृत्यु और दफन देखी है। वे शरीर की सफाई और अभिषेक पूरा करने के लिए कब्र पर लौटती हैं। मार्क पुनरुत्थान को उन महिलाओं की दृष्टि से वर्णित करता है जो पहली बार खाली कब्र को देखती हैं। वे एक स्वर्गदूत से मिलती हैं जिसने पत्थर हटा दिया है। वह उन्हें प्रेरित करता है कि वे प्रेरितों, विशेष रूप से पतरस को (यीशु चाहते हैं कि वह जानें कि वह अभी भी शामिल हैं) बताएं कि वे गलील जाएं जहां वह उनसे मिलेंगे। मार्क उल्लेख करता है कि वे भयभीत थीं, लेकिन हम अन्य सुसमाचारों से जानते हैं कि उन्होंने स्वर्गदूत के निर्देशानुसार कार्य किया।

महिलाओं के लिए यह पहली प्रकटता यहूदियों और गैर-यहूदियों दोनों के लिए महत्वपूर्ण थी क्योंकि दोनों संस्कृतियों में महिलाओं को नीचा समझा जाता था (यहूदी संस्कृति में कम और गैर-यहूदी संस्कृति में अधिक) और विशेष रूप से धार्मिक मामलों में जहां उन्हें अलग रखा जाता था (जैसे महिलाओं का आंगन)। यह गलत धारणा कि किसी तरह परमेश्वर पुरुषों को पसंद करता है, यहाँ टूट गई।

यीशु की उपस्थिति और निर्देश — 16:9-20

अंग्रेज़ी में इस सुसमाचार का अनुवाद करने के लिए उपयोग किए गए अधिकांश पांडुलिपियाँ या तो इन पदों को छोड़ देती हैं, इन्हें किसी प्रकार के कोष्ठक में रखती हैं या इनके लिए एक संक्षिप्त व्याख्या प्रदान करती हैं।

इसका कारण यह है कि यह खंड मरकुस के सुसमाचार की कई सबसे पुरानी पांडुलिपियों में शामिल नहीं है, लेकिन अन्य, बाद के दस्तावेजों में प्रकट होता है।

व्याख्याएँ:

- मार्क की मूल समाप्ति खो गई थी और यह मत्ती, लूका और यूहन्ना में पाए जाने वाले अंत का सारांश है।
- इसे एक लेखक ने जोड़ा क्योंकि मार्क इसे पूरा करने से पहले मर गया था।
- विभिन्न अन्य समाप्तियाँ विभिन्न पांडुलिपियों में प्रकट होती हैं।

यह क्यों शामिल किया गया है?

- कई पांडुलिपियों में यह मौजूद है।
- यह हर अन्य नए नियम की पुस्तक और शिक्षाओं के अनुसार पूरी तरह सटीक है।
- इसे प्रारंभिक चर्च या प्रेरितों द्वारा अस्वीकार नहीं किया गया था।
- हमारे पास इब्रानियों के लेखकों की सटीक पहचान नहीं है, लेकिन क्योंकि इसे प्रारंभिक चर्च ने स्वीकार किया और यह सभी शिक्षाओं के अनुसार पूरी तरह सटीक है, हम इसकी प्रेरणा को स्वीकार करते हैं।

⁹ सप्ताह के पहले दिन प्रभात में जी उठने के बाद वह सबसे पहले मरियम मगदलीनी के सामने प्रकट हुआ जिसे उसने सात दुष्टात्माओं से छुटकारा दिलाया था। ¹⁰ उसने यीशु के साथियों को, जो शोक में डूबे, विलाप कर रहे थे, जाकर बताया। ¹¹ जब उन्होंने सुना कि यीशु जीवित है और उसने उसे देखा है तो उन्होंने विश्वास नहीं किया।

¹² इसके बाद उनमें से दो के सामने जब वे खेतों को जाते हुए मार्ग में थे, वह एक दूसरे रूप में प्रकट हुआ। ¹³ उन्होंने लौट कर औरों को भी इसकी सूचना दी पर उन्होंने भी उनका विश्वास नहीं किया।

- मरकुस 16:9-13

मार्क मरियम और शिष्यों के लिए एम्माउस की सड़क पर विभिन्न प्रकटों का एक त्वरित सारांश प्रदान करता है।

¹⁴ बाद में, जब उसके ग्यारहों शिष्य भोजन कर रहे थे, वह उनके सामने प्रकट हुआ और उसने उन्हें उनके अविश्वास और मन की जड़ता के लिए डाँटा फटकारा क्योंकि इन्होंने उनका विश्वास ही नहीं किया था जिन्होंने जी उठने के बाद उसे देखा था।

¹⁵ फिर उसने उनसे कहा, “जाओ और सारी दुनिया के लोगों को सुसमाचार का उपदेश दो। ¹⁶ जो

कोई विश्वास करता है और बपतिस्मा लेता है, उसका उद्धार होगा और जो अविश्वासी है, वह दोषी ठहराया जायेगा। ¹⁷ जो मुझमें विश्वास करेंगे, उनमें ये चिह्न होंगे: वे मेरे नाम पर दुष्टात्माओं को बाहर निकाल सकेंगे, वे नयी-नयी भाषा बोलेंगे, ¹⁸ वे अपने हाथों से साँप पकड़ लेंगे और वे यदि विष भी पी जायें तो उनको हानि नहीं होगी, वे रोगियों पर अपने हाथ रखेंगे और वे चंगे हो जायेंगे।”

¹⁹ इस प्रकार जब प्रभु यीशु उनसे बात कर चुका तो उसे स्वर्ग पर उठा लिया गया। वह परमेश्वर के दाहिने बैठ गया। ²⁰ उसके शिष्यों ने बाहर जा कर सब कहीं उपदेश दिया, उनके साथ प्रभु काम कर रहा था। प्रभु ने वचन को आश्चर्यकर्म की शक्ति से युक्त करके सत्य सिद्ध किया।

- मरकुस 16:14-20

यह एक प्रकट होने का वर्णन है (जरूरी नहीं कि यह उनका अंतिम प्रकट होना हो) जहाँ प्रेरितों को उनकी अंतिम शिक्षा का सारांश है:

- वह उनकी अविश्वास के लिए उन्हें डाँटता है, यहाँ तक कि अपने पुनरुत्थान के बाद भी।
- वह उन्हें संसार को सुसमाचार प्रचार करने की जिम्मेदारी सौंपता है।
- वह यह भी वर्णन करता है कि पवित्र आत्मा के द्वारा उन्हें समर्थ बनाए जाने के कारण वे कुछ चमत्कार कर सकेंगे।
- पेंटेकोस्ट पर हम इन शक्तियों के प्रकट होने की शुरुआत देखते हैं ताकि यह पुष्टि हो सके कि उनका संदेश वैध था।

उसके स्वर्गारोहण का संक्षिप्त वर्णन है और उसके बाद शिष्यों द्वारा यीशु के नाम पर की गई सेवा। मार्क उल्लेख करता है कि प्रभु का आध्यात्मिक शक्ति का वादा पूरा हुआ जब प्रेरितों ने सुसमाचार फैलाना शुरू किया।

मार्क अपने सुसमाचार रिकॉर्ड को लगभग उसी तरह पूरा करता है जैसे उसने इसे शुरू किया था, संक्षिप्त घोषणात्मक वाक्यांशों के साथ जो यीशु के अंतिम शब्दों को उनके प्रेरितों के लिए सारांशित करते हैं और उनके आज्ञाकारी उत्तर को जो उन्होंने संसार में अपने मिशन को पूरा करने में दिया।